

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला हिमाचल प्रदेश पहले उच्च स्तरीय शंकुवृक्ष पुनरुत्पत्ति अनुसंधान केन्द्र के रूप में मई 1977 में स्थापित किया गया था। इसका उद्देश्य सिल्वर फर तथा स्पूस के प्राकृतिक पुनरुत्पत्ति में आने वाली समस्याओं पर अनुसंधान करना था। केन्द्र ने इस कार्य के लिए तकनीक विकसित की और राज्य वन विभागों को सौंप दी। वानिकी अनुसंधान के पुनर्गठन और भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून के गठन (1987) के बाद इस केन्द्र का कार्य विस्तार किया गया जिसे सिल्वर फर और स्पूस की पुनरुत्पत्ति से बढ़ाकर शीत रेगिस्तानों का पारि-पुनरुत्थान, खनित क्षेत्र पुनर्स्थापन, नाशिकीट एवं रोग प्रबंधन और इसके साथ-साथ पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि वानिकी पद्धतियां तथा शंकु वृक्षों तथा चौड़ी पत्ती वाले वनों में पुनरुत्पत्ति का काम दिया गया। इस केन्द्र का नाम 1998 में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला कर दिया गया। यह संस्थान हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू और कश्मीर की वानिकी अनुसंधान आवश्यकताओं पर कार्य करता है।

परिषद् द्वारा इस संस्थान को कठोर स्थलों को पारि-पुनर्स्थापन का अग्रिम कार्य दिया गया है और इसे शीत रेगिस्तान वनीकरण तथा चारागाह प्रबंधन का अग्रिम केन्द्र घोषित किया गया है। टाबू (लाहोल स्पीति) में स्थापित अनुसंधान केन्द्र का मुख्य कार्य शुष्क क्षेत्रीय स्थितियों में क्षेत्र की विशेष अनुसंधान आवश्यकताओं को पूरा करना है।

वर्ष 2006-2007 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

परियोजना 1 : निरन्तर आय प्राप्त करने के लिए ग्रामीण समुदायों में औषधीय पादपों की खेती को प्रोत्साहित करना [एच पी एफ एस आर / जी आई एफ / 2006-2007]

उपलब्धियां : कार्य क्षेत्रीय सर्वेक्षणों तथा राज्य वन विभागों से परामर्श के उपरांत चार स्थलों अर्थात् डीडाग : 2003 एम (राजगढ़), कालय : 1252 एम (श्री रेणुका जी), सालानी, 370 एम (नहान) तथा जोहरोन : 360 एम (पौंटा) को औषधीय पादपों के प्रदर्शन भूखण्डों के लिए चुना गया। वाणिज्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण 28 औषधीय प्रजातियों को उगाया गया और जागरूकता तथा प्रशिक्षण के लिए अनुरक्षित किया गया। परियोजना के तहत वाणिज्यिक संवृद्धि को लोकप्रिय बनाने के लिए आठ प्रशिक्षण दिये गये जिनमें 448 भागीदारों ने भाग लिया जिनमें किसान, बी एफ डी सी के सदस्य, महिला मण्डल, एन जी ओ तथा सिरमौर जिले के वन विभाग के अग्रगामी कर्मचारी शामिल थे। प्रशिक्षण सामग्री को सरल हिन्दी में बनाया गया और प्रशिक्षणार्थियों में वितरित किया गया।



प्रदर्शन भूखण्डों में कोलियस एम्बोनीकस तथा विथानिया सोम्नीफेरा की निष्पादकता

परियोजना 2 : चयनित औषधीय पादपों के वृहत प्रसार के लिए पौधशाला तकनीकों का मानकीकरण [एच एफ आर आई-009 / 07 (एन डब्ल्यू एफ पी-01) / प्लान / 2000-2007]

उपलब्धियां : शीतोष्ण हिमालय ब्रुन्धार पौधशाला (मनाली) में 33 औषधीय पादपों, सिली नर्सरी (सोलन) में 30 तथा शिलारू नर्सरी, शिमला में 10 प्रजातियों के जर्म प्लाज्मों को अनुसंधान, प्रशिक्षण और प्रदर्शन के लिए अनुरक्षित किया गया। आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण औषधीय पादपों अर्थात् पिक्रोराइजा कुर्रोया (कारू), एकोन्टियम हीट्रोफाइलम (पतिश), वैलीरिआना जटामांसी (मुश्कबाला), अंगेलिका ग्लाउमा (छोरा) आदि के कृषि तकनीकों में सुधार के लिए पौधशाला परीक्षण किये गये। इन चार प्रजातियों यथा : पिक्रोराइजा कुर्रोया, वैलीरिआना जटामांसी, एकोस्टियम हीट्रोफाइलम तथा एन्जीलिका के वृहत नर्सरी स्टॉक के लिए तकनीकों में सुधार किया गया। एकोनीटम हीट्रोफाइलम तथा एन्जीलिका ग्लूका के मामले में बीजों द्वारा प्रसार तकनीक में सुधार किया गया। इन प्रजातियों के नर्सरी स्टॉक उत्पादन के लिए वैज्ञानिक सहायता का मानकीकरण किया गया।

परियोजना 3 : शंकु वृक्ष तथा उनके चौड़ी पत्ती वाले संबद्धों के लिए नर्सरी तनकीक का मानकीकरण [एच एफ आर आई-016 / 05 (एस एफ जी-06) / प्लान / 2000-2007]

उपलब्धियां : सीड्रस देवदारा, पिसिया स्मिथिआना और एबीज पिन्ड्रो के पौधशाला उत्पाद के लिए प्रारंभिक परीक्षण किये गये। इस प्रकार प्राप्त परिणामों से पता चला कि इन तीनों शंकु वृक्षीय प्रजातियों की वृद्धि निष्पादकता सिंगल सेल रूट ट्रेनर में सबसे अच्छी होती है। इसी प्रकार एल्नस निटीडा और ग्रेविया ओप्टीवा का नर्सरी स्टॉक भिन्न प्रकार के रूट ट्रेनर में उगाने पर सर्वोत्तम होता है। स्पूस (पिसिया स्मिथिआना) प्लग + 2 तथा प्लग + 3 में सिल्वर फर (एबीज पिन्ड्रो) को नर्सरी स्टॉक के रूप में पहले कन्टेनरी और बाद में खुली जड़ों पर उगाने पर प्रयोग किये गये। शीत रेगिस्तानी वानस्पतिक प्रजातियों यथा इलेंगनस अम्बिलाटा, कॉलूटीया नेपेलेन्सिस तथा रोजा विवियाना पर प्रसारण परीक्षण किये गये।



रूट ट्रेनर्स में सेडरस देवदार



ग्रीविया आप्टीवा में रूट ट्रेनर परीक्षण

वर्ष 2006-2007 के दौरान जारी परियोजनाएं

परियोजना 1 : हिमाचल प्रदेश के भिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों में कृषि वानिकी के लिए पॉलोनिया प्रजाति को पहचान और निष्पादकता परीक्षण [एचएफआरआई-026 / 08 (ए जीएफ-02) प्लान / 2003-2008]

स्थिति : प्रकाष्ठ, जलाऊ काष्ठ और चारे की बढ़ती हुई मांग को न्यूनतम करने के लिए पावलोनिया प्रजातियों यथा पी. फोर्टूनी, पी. फार्गसी, पी. इलॉगेट तथा पी. टोमेन्टोसा को हिमाचल प्रदेश के विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों में स्थापित किया गया। चाय की फसल के साथ पावलोनिया प्रजाति अन्तः फसल उगाने पर भी परीक्षण किये जा रहे हैं।



पौधशाला में ई टी पी के पॉलोनिया प्रजाति को उगाना



जोहरोन, पौंटा (हि०प्र०) में पॉलोनिया प्रजाति का परीक्षण



पॉलोनिया प्रजाति में पुष्पन

परियोजना 2 : हिमाचल प्रदेश की मध्य और उच्च पहाड़ियों में पहचान सर्वेक्षण और वर्तमान कृषि वानिकी पद्धतियों की जानकारी [एचएफआरआई-028/08 (एजीएफ-03) प्लान/2003-2008]

स्थिति : व्यापक पहचान सर्वेक्षण के उपरान्त हिमाचल प्रदेश के कुलू जिले के मध्य और उच्च पर्वतीय शीतोष्ण क्षेत्रों में कृषि वानिकी पद्धतियों की पहचान की गई। संक्रियात्मक स्रोतों के आकार के आधार पर किसानों की तीन श्रेणियों में बांटा गया अर्थात् सीमांतक, छोटे, मध्यम और बड़े परिवार के आकार, परिवार के मुखिया का शिक्षा स्तर, भूमि उपयोजन सांख्यिकी, सरकारी रोजगार की स्थिति तथा पशुपालन स्तर का सामाजिक आर्थिक अध्ययन किया गया। किसानों के साथ सम-संरचनात्मक साक्षात्कार लिये गये तथा जीव विज्ञानीय उत्पाद और विभिन्न कृषि वानिकी पद्धतियों से आर्थिक प्राप्ति पर सर्वेक्षण किया गया।



सेब के साथ ब्रेसिका रेपा

परियोजना 3 : पांच मुख्य देशज प्रजातियों यथा (कैपेरिस स्पिनोसा, कॉलूटिया नेपालेन्सिस, कारागाना जैरारडिआना, रीबीस ओरियन्टेली, क्रेटेगस सोंगारिका) पर नर्सरी तकनीकों का मानकीकरण किया गया और साथ ही इलेग्नस अंगुष्ठीफोलिया, हिप्पोफी रेम्नॉइडस तथा रोजा वीबियाना पर अध्ययन किया गया। [एच एफ आर आई-019/03 (ई वी सी -08) प्लान/2002-2009]

स्थिति : निम्न को (i) इन्डोल-3 ब्यूटीरिक अम्ल का रिबीस ओरियन्टेल, कोल्यूटीया नेपालेन्सिस, इलेग्नस अंगुष्ठीफोलिया, हिप्पोफी रेम्नॉइडस तथा रोजा वीबियाना और कैपेरिस स्पिनोसा के अन्तर्भूस्तरी का जड़ कर्तनों में जड़ीय विकास पर प्रभाव (ii) बौने से पहले (गरम पानी तथा गिबरेलिक अम्ल) के उपचार का, रीबीस ओरियन्टेल, कोल्यूटा नेपालेन्सिस, हिप्पोफी रेम्नॉइडस, कैपेरिस स्पिनोसा तथा रोजा वीबियाना के बीजों के अंकुरण पर प्रभाव (iii) रीबीस ओरियन्टेल, कोल्यूटीया नेपालेन्सिस, हिप्पोफी रेम्नॉइडस, कैपेरिस स्पिनोसा तथा रोजा वीबियाना पर माध्यमों



(रेत और मृदा के विभिन्न अनुपातों) का बीजों के अंकुरण पर प्रभाव, को समझने के लिए परीक्षण को इन-हाउस तथा पौधशाला स्थितियों में दोहराया गया। इसके साथ-साथ रीबीस ओरन्टियेल, हिप्पोफी रेमनोइड्स, रोजा वीबियाना तथा कैपेरिस स्पाइनोसा पर घास-पात से ढकने के प्रभाव पर प्रयोग किये गये।

चिन्हित प्रजातियों के लिए व्यापक पारितंत्रीय अध्ययन किये गये जिन्हें चयनित स्थलों : मानें, लेडांग, कुरिथ, हर्लिंग, टाबू और हिमाचल प्रदेश की स्पीति घाटी से लिया गया था। विभिन्न पौधशाला परीक्षणों से पता चला कि हिप्पोफी रेमनोइड्स के बीजों को 24 घंटों तक गरम पानी से उपचारित करने पर अधिकतम अंकुरण प्रतिशत प्राप्त हुआ।

यह पाया गया कि पॉली टनल्स के भीतर किये गये प्रयोग खुली नर्सरी की बजाय अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। इलेग्नस एंग्वेस्टीफोलिया, हिप्पोफी रेमनोइड्स, रोजा वीबियाना तथा कोल्यूटिया नेपालेन्सिस के आंकलन के लिए कार्य क्षेत्रीय परीक्षण स्थापित किये गये।

रोजा वीबियाना, कैपेरिस स्पाइनोसा, कारागना जेरारडियाना तथा रीबिस ओरियन्टेल का प्रदर्शन जानने के लिए भूमि के भीतर पॉलीहाउस, शेड हाउस तथा पाली टनल स्थितियों में परीक्षण किये गये। इसके अलावा इलेग्नस एंग्वेस्टीफोलिया, रिबिस ओरियन्टेल तथा क्रैटीगस सोंगारिका की जड़ीय पद्धति पर आई वी ए की विभिन्न सांद्रण में अध्ययन किये गये। साथ ही, रोजा विबियाना की जड़ों में वृद्धि पर परीक्षण किया गया।

परियोजना 4 : जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश के शीत रेगिस्तान में पादप वैविध्य का अध्ययन [एच एफ आर आई-029/02 (ई बी सी-11) प्लान/2004-2007]

स्थिति : 3000 मीटर से 5000 मीटर पर हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले के पूह प्रभाग की लबरंग घाटी में फाइटोसोसियोलोजिकल अध्ययन किये गये।

पूह उप प्रभाग, किन्नौर जिले में लबरंग घाटी में 3000 मी. से 5000 मी. पर वानस्पतिक डाटा का विश्लेषण किया।

क्षेत्र में 75 औषधीय पादपों को रिकार्ड किया गया जिनमें से 16 प्रजातियों को संकटापन्न श्रेणी में रखा गया था यथा: एकोनीटम हेट्रोफाइलम, बर्जेनिया स्ट्रेचिया, बेटुला यूटीलिस, कोरेडेलिस गोवानियाना, डेक्टायलोरिजा हेटेजीरिया, हेराक्तेलम, केन्डीकेन्स, हाइसामस नाइजर, हाइसोपस आफीसिनेलीस, जूनीपरस कम्प्युनिस, जूनीपरस मैक्रोपोडा, लेक्टुका मैक्रोरिजा, ल्यूरोपरमम ब्रूनोन्सिस, रयूम रोहोडिओला हेट्रोडोन्टा, सेलीनम टेनूफोलियम तथा थाइमस लाइनिर्यस।

परियोजना 5 : हिमाचल प्रदेश की पांच क्वेकस प्रजातियों के प्राकृतिक शत्रुओं की जटिलता और मुख्य नाशिकीट [एच एफ आर आई-027/06 (एफ पी टी-05) प्लान/2003-2008]

स्थिति : "भारतीय जिप्सी मोथ" (आई जी एम) के जीवन चक्र पर अध्ययन दोहराया गया और मोथ की अपरिपक्व स्थितियों पर मोर्फोमेट्रिक अध्ययन किये गये। आई जी एम के रोगग्रस्त लार्वा, न्यूक्लियर पॉली हाइड्रोसिस वाइरस को निकाला गया और साफ करके टी ई एम के तहत अध्ययन किये गये। प्यूपल परजीव्याभ एक्सोरिस्टा रोसिका पाया गया और प्राकृतिक दुश्मनों में परभक्षी मकड़ियों की 21 प्रजातियों का पता लगाया गया।

बांज वनों से आई जी एम के अपरिपक्व लार्वा को एकत्र किया गया और प्रयोगशाला में उन्हें उनका प्राकृतिक आहार (बांज की पत्तियों) को खिलाया गया और इस प्रकार निकलने वाले वयस्कों का जीवन चक्र का अध्ययन करने हेतु संगम कराया गया।

एन पी वी अध्ययन : प्रयोगशाला में पोषित इल्लियों को पिछले वर्ष की संक्रमित इल्लियों से निकाल कर शुद्ध किये गये विषाणु घोल से संक्रमित किया गया। बांज की पत्तियों को भी विषाणु घोल से संक्रमित करके इल्लियों को खाने के लिए दिया गया। ट्रांसमिशन इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप के द्वारा विषाणु के संरचनात्मक विवरणों का अध्ययन किया गया।

परजीव्याभ तथा परभक्षी : टेकनीडाई कुल का प्यूपल परजीव्याभ एकसोरिस्टा रोसिका, को आई जी एम पर नियंत्रण के लिए सबसे प्रभावशील पाया गया।

परियोजना 6 : हिमाचल प्रदेश और जम्मू और कश्मीर में मुख्य औषधीय पादपों के सर्वेक्षण और जीव विज्ञान तथा नाशिकीटों पर नियंत्रण [एच एफ आर आई-033/06 (एफ पी टी-07) प्लान/2005-2010]

स्थिति : इस क्षेत्र में बोये जाने वाले 13 चयनित औषधीय पादपों में 32 कीट प्रजातियों को रिकार्ड किया गया। नुकसान की अधिकता की दृष्टि से इन कीटों के स्तर और प्रचुरता का आंकलन किया गया और पाया गया कि प्लूसिया ओरिकेलिसिया फेब सबसे घातक कीट है। प्रयोगशाला में पी. ओरिकेलिसिया का सौसूरिया कोस्टस पर जैवकीय अध्ययन पूरा किया गया।



कुथ का नाशिकीट, प्लूसिया ओरिकेलिसिया का शलभ

प्रयोगशाला में, पी. ओरिकेलिसिया का विभिन्न स्तरों पर विकास तथा रूपविज्ञानीय अभिलक्षणों का अध्ययन किया गया। पहली बार हिमाचल प्रदेश के वैलीरिआना जटामांसी पर बरुथी का प्रकोप पाया गया जो पौधशाला में 30-80% था। बरुथी प्रजातियों की पहचान पैनोनाइकस अल्मी (कोक) के रूप में की गई यूरोपीय रेड माईट और टेट्रानिकस अर्टिसाई, स्पाईडर माईट हैं जो संभवतः सेब को नुकसान पहुंचाते हैं।

परियोजना 7 : हिमाचल प्रदेश में देशी और सांस्थानिक भागीदारी वन प्रबंधन का प्रारंभिक अध्ययन [एच एफ आर आई-025/08] (पी एफ एम-01) प्लान/2005-2008]

स्थिति : नहान, रामपुर मण्डी और धर्मशाला सर्किलों के विभिन्न वन विकास समितियों और पंचायतों का सर्वेक्षण किया गया।

परियोजना 8 : सिद्धस देवदारा पर रोपण स्टॉक सुधार कार्यक्रम [एच एफ आर आई-028/05 (एस एफ जी-08) प्लान-03/2003-2008]

स्थिति : हिमाचल तथा जम्मू और कश्मीर राज्यों में देवदार के सर्वोत्तम बीज खंडों का चयन के लिए किये गये सर्वेक्षण पर आधारित नमूना भूखण्ड से बीजखण्डों का चयन किया गया। देख कर चयनित किये गये बीज खंडों जिनका बीज उत्पादन क्षेत्र के पूरक के रूप में इन नमूना भूखण्डों का अध्ययन किया गया था। दो बीज खण्ड अर्थात थियोग वन प्रभाग के थियोग वन (20 है.) तथा रामपुर वन प्रभाग के नन्खारी वन (15 है.) को सूची में शामिल किया गया।

जम्मू और कश्मीर में राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जम्मू के सहयोग से भद्रावाह वन प्रभाग के बीज खंडों की पहचान की गई जिन्हें संबंधित अधिकारियों के पास भेजा जा रहा है। 52 प्लस वृक्षों की पहचान करके शंकुओं को संग्रहित किया गया नर्सरी में उत्पत्ति परीक्षणों के लिए उगाया गया।

परियोजना 9 : देवदार (सिद्धस देवदारा) की प्राकृतिक आबादी में एलोजाइम विविधता [एच एफ आर आई-030/05 (एस एफ जी-10) प्लान-03/2005-2008]

स्थिति : देवदार की विभिन्न आबादियों (15) में आइसोजाइम तकनीक का प्रयोग करते हुए पृथक्कता की भिन्न आनुवंशीय तकनीकों पर अध्ययन किया जा रहा है जिसमें पांच एन्जाइम पद्धतियों : एस के डी एच, एम एन आर, आई डी एच, जी डी एच और एम डी एच पर अध्ययन किया जाना है। हिमाचल प्रदेश से छः और जम्मू और कश्मीर से एक आबादी को इन एन्जाइम पद्धतियों के लिए इलेक्ट्रोफोरेसिस किया गया।



सिक्किमिक अम्ल डिहाइड्रोजीनेस (एस के डी एच) : तीन सिंगल बैडेड फीनोटाइप्स के लिए एक क्षेत्रीय क्रिया-कलापों को एन्डोस्पर्म तथा एम्ब्रोस दोनों के लिए चिन्हित किया गया।

मिलेट डिहाइड्रोजीनेस (एम डी एच) : एम डी एच के लिए स्टेण्ड जेल के चार क्षेत्रों में क्रिया प्रदर्शित किये। इन आबादियों के लिए पद्धतियों का अध्ययन किया गया और इस वर्ष शेष आबादियों पर अध्ययन किया जाना है।

वर्ष के दौरान अधिक एन्जाइम पद्धतियां बनाने के प्रयास किये गये और इस प्रयास में दो और पद्धतियों के प्रोटोकॉल्स को मानकीकृत किया गया। अर्थात् एम डी एच तथा 6 पी जी डी एच। ये एन्जाइम पद्धतियों को आनुवंशिकीय विविधता और प्रजातियों में भेद के लिए उपयोग में लाया जायेगा।

वर्ष 2006-2007 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाएं

परियोजना 1 : ज्यूनीपेरस पॉलीकार्पस सी. कोच तथा फ्रैक्सीनस एकजांथोक्सीलोइड्स के बीज संग्रह, बीज प्रहस्तन, भण्डारण तथा बीज की सुप्तता को तोड़ने के लिए कार्य विधि का मानकीकरण (वाल एक्स जी डान) डी सी [एच एफ आर आई-036 / 03 (एस एफ जी-11) प्लान-2006-2011]

स्थिति : किन्नौर जिले के ऊपरी जनजातीय क्षेत्रों में कार्यक्षेत्रीय दौरे किये गये और लाबरंग कान्डा और रूपा कान्डा में थोपन, किरनखुड, स्पाईलों, लाबरंग और ज्यूनीपेरस पॉलीकार्पस तथा फ्रैक्सीनस के बीजोत्पादक वृक्षों का चयन किया गया। प्रक्रमित बीजों को विभिन्न पूर्व बोआई उपचार दिये गये अर्थात् भिन्न समयावधियों में नरम बालू के स्तरीकरण / साथ ही अकुरण अध्ययन भी शुरू किये गये। प्रयोगशाला में बीजों की नमी मात्रा को रिकार्ड किया गया। विभिन्न स्टोरेज कन्टेनरों का उपयोग करते हुए भिन्न पर्यावरणीय स्थितियों में बीज भण्डारण परीक्षण किये गये।



ज्यूनीपेरस पॉलीकार्पस बीज



फ्रैक्सीनस एकजांथोक्सीलोइड्स के बीज

परियोजना 2 : हेमिस उच्च तुंगता राष्ट्रीय पार्क, लद्दाख, जम्मू और कश्मीर में पुष्पीय वैविध्य का पारितंत्रीय अध्ययन [एच एफ आर आई-031 / 02 (ई बी सी-12) प्लान / 2006-2011]

स्थिति : मुख्य वन्यजीव वार्डन और संबंधित अधिकारियों से संपर्क विकसित किया गया। वन्य जीव आफिस स्टाफ की सहायता से रूपरेखात्मक मानचित्र तैयार किये गये और पार्क क्षेत्र के अंतर्गत रास्ते निश्चित किये गये जिनसे क्षेत्र की वास्तविक विविधता जानने के लिए पार्क के विस्तृत क्षेत्रों तक पहुंचा जा सके। मार्शलंग से हेमिस क्षेत्र तक सर्वेक्षण और पारितंत्रीय अध्ययन किये गये।

नदी घाटियों में वनस्पति किस्मों को प्रलेखीकृत किया गया। विश्लेषण के लिए मृदा नमूने एकत्र किये गये। मानव वनस्पति शास्त्रीय रिकार्डों की शुरुआत की गई और साथ स्थानीय आम्ची से सूचनायें प्राप्त की गई।

परियोजना 3 : चीड़ पाईन के वनों में छिद्रक कीटों का प्रबंधन [एच एफ आर आई-035 / 06 / एफ पी टी-08] 2006-2011]

स्थिति : दो वनीय स्थल अर्थात डी-113, साइरीघाट वन (सोलन फारेस्ट डिविजन) तथा पी-8 सन्टाना फारेस्ट्स (हमीरपुर वन प्रभाग) को अवलोकन प्रयोग के लिए चुना गया और वृक्ष स्वास्थ्य पर मूल आंकड़े रिकार्ड किये गये। इन स्थलों में 1000 वर्ग मी. के तीन प्लॉट चिह्नित किये गये और चीड़-पाईन के वृक्षों के कीट समूह और उनके प्राकृतिक शत्रुओं को रिकार्ड किया गया। तना छिद्रकों को नियंत्रित करने हेतु कीटनाशकों की क्षमता जानने के लिए (ग्रोनिम तथा इडोसल्फान 35 ई सी) पर सैरीघाट में प्रयोग किया गया।

परियोजना 4 : हिमाचल प्रदेश में मृदा उर्वरकता स्थिति और महत्वपूर्ण पोषक कृषि वानिकी पद्धतियां [एच एफ आर आई / 034 / 08 (ए जी ई-04) प्लान / 2006-2011]

स्थिति : हिमाचल प्रदेश के शिमला, हमीरपुर, बिलासपुर तथा मण्डी जिलों में मुख्य कृषि वानिकी पद्धतियों पर कार्य क्षेत्रीय सर्वेक्षण किये गये। मृदा नमूनों को संग्रहित किया गया और महत्वपूर्ण कृषि वानिकी पद्धतियों में मृदा उर्वरकता के लिए विश्लेषित किया गया। मुख्य वानिकी प्रजातियों से पोषक तत्वों की प्राप्ति के लिए प्रायोगिक परीक्षण किये जा रहे हैं।



हिमाचल प्रदेश में कुछ मुख्य कृषि वानिकी पद्धतियां

**वर्ष 2006-2007 के दौरान जारी परियोजनाएं
(बाहर से सहायता प्राप्त)**

परियोजना 1 : वाणिज्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण औषधीय पादपों की अन्तः फसलें विकसित करने के लिए उपयुक्त मॉडल जिनमें हिमाचल के शीतोष्ण क्षेत्रों के फलोद्यान रोपण भी शामिल हैं [बी टी / पी आर बी-4372 / पी बी डी / 17 / 285 / 2003]

स्थिति : चयनित औषधीय पादपों के विभिन्न अन्तः फसल परीक्षणों यथा: एस्कोनीटस हेटरोफाइलम, एंगीलिका ग्लूका, पोलगानेटम वर्टीसाइलेटम, पिकोरिजा कुरुआ तथा वेलेरियाना जटामांसी को सेब, चेरी, ओचार्ड को फलोद्यान फसलों के साथ अनुरक्षित किया गया। इन फसलों के उद्यानों को हिमाचल प्रदेश के शिमला और कुल्लू जिले के उच्च शीतोष्ण भागों में 2004 और 2005 में स्थापित किया गया था। पूर्व कृषि फसल वृद्धि अभिलक्षणों और विभिन्न अन्तः फसलीय परीक्षणों के पैरामीटर अध्ययन किये गये। अन्तः फसलीय परीक्षण स्थलों से विभिन्न औषधीय पादपों की जैव मात्रा का अध्ययन किया गया और विभिन्न माडलों के तहत सक्रिय सिद्धांतों के अनुसार संवृद्धि नमूनों का विश्लेषण किया गया।

परियोजना 2 : लाहौल एवं स्पीति, हिमाचल प्रदेश के खास शुष्क शीतोष्ण और एल्पाइन चरागाहों में पारिस्थितिकीय एवं प्रबंध अध्ययन [बी टी/पी आर/4102/एन बी डी बी/51/027 / 2003 / 2004–2007]

स्थिति : पुष्पीय सम्पदा के लिए जिलों के प्रत्येक तुंगीय चरागाहों अर्थात मिआर नाला, त्रिलोकनाथ, डालांग तथा क्वारिंग (लाहौल घाटी) और ग्यू, टाबू तथा कुंजम (स्पीति घाटी) का पुनः सर्वेक्षण किया गया। खोखसर (लाहौल घाटी) तथा कियातो और गाटे (स्पीति घाटी) के वनस्पतीय तत्वों के आंकलन सहित पर्वतीय चरागाहों के संरचनात्मक और क्रियात्मक पहलुओं पर व्यापक अन्वेषण किया गया।



प्राइमुला रेप्टेन्स



अर्नेबिया यूकोरोमा



प्राइमूला रोसिया



पेडीक्यूलेरिस पेकटीनाटा

परियोजना 3 : हिमाचल प्रदेश की लाहौल घाटी में पारितंत्रीय दृष्टि से जीवनक्षम तथा सामाजिक आर्थिक रूप से स्वीकार्य संयुक्त माडल जिनका उद्देश्य विलो (सेलिक्स प्रजा.) की मृत्युता के कारणों का पता लगाना है का विकास [जी वी पी आई / आई ई आर पी / 04–05 / 34 / 861 / 2005–2008]

स्थिति : टिनान और पाटन घाटियों में बेंचमार्क सर्वेक्षण किया गया जिसमें स्थलों पर मृत्युता, प्रभावित वृक्षों की संख्या तथा अन्य पारितंत्रीय मापदण्डों को रिकार्ड किया गया। सेलिक्स अर्थात एस. फ्रेजीलिस, एस. बेटीलिना, एस मट्सूधना, एस. बेवीलोनिका, एस. एल्बा और एस. कोरुलिया को जम्मू और कश्मीर से संग्रहित किया गया। अंतर्राष्ट्रीय कृन्तकों का क्रय किया गया जिनके कोड नाम इस प्रकार हैं – यू ए डब्ल्यू-1, यू ए डब्ल्यू-2, यू डब्ल्यू ई-1, यू डब्ल्यू एम 1; यू डब्ल्यू एम-2, यू डब्ल्यू एम-3, यू डब्ल्यू यू-1, यू डब्ल्यू यू-2, यू डब्ल्यू के, यू डब्ल्यू एच वाई-1, यू डब्ल्यू एच वाई-2 तथा डब्ल्यू ओ 2-4.

सिस्सू (लाहौल घाटी) और टाबू (स्पीति घाटी) में पौधशालायें स्थापित की गईं और विलो तथा पाप्लर की रोपण सामग्री उगाई गई और रोपण स्टॉक का विश्लेषण किया गया। 0.5 है. से अधिक वन भू-भाग में विलो और पाप्लर की प्रदर्शन रोपणियां भी स्थापित की गईं।

विलो फ्रीडिंग एफिड्स की दो प्रजातियां रिकार्ड की गईं यथा: ट्यूबरोलेकनस सेलिग्नस (एफीडोइडीया : लेचेनीडी), जाइन्ट विलो एफिड, तथा टैरोकामा सेलिक्स, ब्लैक विलो एफिड।

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान सिस्सू (लाहौल घाटी) में पौधशाला स्टाक उगाया गया, प्रदर्शन, रोपणे स्थापित और अनुरक्षित की गई। इसके अलावा टाबू (स्पीति घाटी) में सेलिक्स के विभिन्न उद्गमों के 5000 रोपण स्टॉक को अनुरक्षित किया गया।

प्रभावित स्थलों से लिये गये मृदा नमूनों को प्रयोगशाला में भौतिक रासायनिक गुणों के लिए विश्लेषित किया गया।



विलो रोपण स्टॉक उगाना तथा उसका अनुरक्षण करना

परियोजना 4 : हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले कोलडाम जल विद्युत परियोजना के तहत वन क्षेत्रों का पारितंत्रीय आकलन [एफ टी 48-88/86 (एफ सी ए) सी ए टी पी कोलडाम-फंडिंग निकाय : एच पी एस एफ डी]

स्थिति : बिलासपुर के वन प्रभाग के विभिन्न कैचमेन्ट क्षेत्रों सुकेत, कुनीहार, शिमला, थियोग और करसोंग में अध्ययन स्थलों का चयन किया गया। मृदा के रासायनिक गुण जानने के लिए मृदा नमूने एकत्र किये गये। बिलासपुर, कुनीहर, थियोग तथा करसोंग वन प्रभागों के विभिन्न कैचमेन्ट क्षेत्रों से एकत्रित डाटा का विश्लेषण किया गया। 2006 में हिमाचल प्रदेश के शिमला और सुकेत वनों में फाइटोसोसियोलोजिकल अध्ययन किये गये और तुंगता अनुसार वानस्पतिक डाटा का विश्लेषण किया गया।

परियोजना 5 : हिमाचल प्रदेश के रकचम, चिटकुल वन्यजीव अभ्यारण, किन्नौर में पादप वैविध्य पर अध्ययन [जी बी पी आई / आई ई आर पी / 04-05 / 15 / 862-फण्डिंग निकाय : जी बी पी आई]

स्थिति : अध्ययन स्थल चयन किया गया और अभ्यारण्य के डोजे वन, शोन खड तथा कान्सा नाला (रकचम बीट) में 3000-3600 मीटर तुंगता तथा हिच पवंग, मूर्ती पनग क्षेत्र चिटकुल बीट में 3300-4200 मी. तुंगता पर फाइटोसोसियोलोजिकल अध्ययन किये गये। विविधता सूची का आकलन करने के लिए डाटा विश्लेषण किया गया।

परियोजना 6 : हिमाचल प्रदेश में स्पीति घाटी के शीत रेगिस्तानी क्षेत्रों में प्रदर्शन भूखण्डों की स्थापना तथा पौधशाला में स्तरीय रोपण स्टाक उगाने के लिए हिप्पोफी रैमनोइड्स की जर्मप्लाज्म क्षमता की जांच [डी डी पी / स्पीति / एम वी टी / 2006-2011 / 2006-2009]



स्थिति : पूरी स्पीति घाटी में सर्वेक्षण किया गया और विभिन्न अवस्थितियों में उगने वाली आबादी का अध्ययन किया गया। रोपण सामग्री के संग्रह के लिए टाबू, शीगो तथा माने का चयन किया गया। चयन के दौरान किसी आबादी में विविधताओं का अवलोकन किया गया, रिकार्ड किया गया और तदनुसार रोपण स्टॉक एकत्रित किया गया।

टाबू अनुसंधान स्टेशन में 0.5 हे. क्षेत्र में प्रदर्शन भूखण्ड स्थापित किया गया। इसके साथ ही एस बीटी की नर्सरी स्थापित की गई जहां 15000 पौधे उगाये जा रहे हैं ताकि उनका और अधिक बहुगुणन करके घाटी में वितरण किया जा सके।

परियोजना 7 : हिमाचल प्रदेश में बर्वेरिन एरिस्टाटा डी सी के विभिन्न उद्गमों में आबादी स्तर तथा बर्वेरिन मात्रा का अध्ययन तथा प्रसारण तकनीकों का मानकीकरण [बी टी/पी आर/4695/पी बी डी / 17 / 300 / 2005–2008—निधिकरण निकाय : डी बी टी]

स्थिति : बी. एरिस्टाटा के मुख्य कृन्तकों/उद्गमों से वृहत पौधशाला प्रसार विकसित किया जा रहा है। हिमाचल प्रदेश में बी. एरिस्टाटा के छः उद्गमों की पहचान कर ली गई है। बीज अंकुरण अध्ययनों के लिए सराहन उद्गम से एकत्रित बीजों पर भिन्न उपचार किया जा रहा है।

इस वर्ष के दौरान मण्डी जिले में बी. एरिस्टाटा के एक उद्गमस्थल की पहचान की गई। अगस्त 2006 में चम्बा जिले में व्यापक सर्वेक्षण किया गया किन्तु वहां बी. एरिस्टाटा का पता नहीं चला। नरकण्डा उद्गम से एकत्रित बीजों पर भिन्न उपचार किया गया जिससे पता चला कि 2 मिनट तक बीजों को सल्फयूरिक अम्ल में उपचारित करने पर अधिकतम बीज अंकुरण होता है।

परियोजना 8 : हिमाचल प्रदेश की कुल्लू घाटी में पादप वैविध्य सूचीकरण व प्रलेखीकरण और विभिन्न पवित्र कुंजों के संरक्षण हेतु स्थल विशेष प्रबन्ध नीति का विकास [जी बी पी आई/आई ई आर पी / 04–05 / 18 / 865 / 2005–2008]

स्थिति : अध्ययन का उद्देश्य, पादप वैविध्य की सम्पत्ति सूची बनाना और प्रलेखीकरण करना, साथ जुड़े हुए क्षेत्रों से पुनरुत्पत्ति स्थिति की तुलना करना, स्थानीय लोगों में जागरूकता पैदा करना और लोगों की भागीदारी से पुनर्योवन के लिए स्थल-विशेष रणनीति तैयार करना तथा पवित्र वृक्ष समूहों का संरक्षण करना है।

वर्तमान अवधि में 11 पवित्र वृक्ष समूहों के पुष्पीय वैविध्य, मानव वानस्पति तथा प्रबंधन पद्धतियों पर सूचनायें एकत्र की गई सभी पवित्र वृक्ष समूहों से पादप नमूने लिये गये और सभी संग्रहित प्रजातियों के लिए हर्वेरियम नमूने तैयार किये गये। सात पवित्र वृक्ष समूहों के जी बी एच तथा ऊंचाई पर आंकड़े एकत्र किये गये। स्थानीय लोगों के साथ साक्षात्कार करके पारम्परिक मानव-वनस्पति सूचनायें एकत्र की गई तथा 51 पादप प्रजातियों को प्रलेखीकृत किया गया। पवित्र वृक्ष समूहों के संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए स्थानीय भाषा में एक पम्पलेट तैयार किया जा रहा है।



सोईल के पवित्र उपवन में देवदार के वृक्ष



प्रीनी में पवित्र उपवन का दृश्य

परियोजना 9 : निरंतर आय प्राप्ति के लिए ग्रामीण समुदायों को औषधीय पादप उगाने हेतु प्रोत्साहित करना ।

स्थिति : तीन प्रदर्शन भूखंड स्थापित किये गये और करीब पांच सौ किसानों, एन जी ओ, महिला मण्डल प्रतिनिधियों, वन विकास समुदाय के सदस्यों तथा हिमाचल प्रदेश वन विभाग के अग्रगामी कर्मियों को आठ प्रशिक्षण दिये गये। प्रदर्शन भूखण्डों को अनुरक्षण तथा भविष्य में उपयोग के लिए वन विभाग को हस्तान्तरित किया गया। किसानों तथा अन्य पणधारियों को प्रशिक्षण दिया गया।

परियोजना 10 : पिक्रोराइजा कुरुआ तथा वेलिरिआना जटामांसी की स्तरीय रोपण सामग्री का उत्पादन तथा स्थानीय लोगों में संवृद्धि प्रौद्योगिकी का विस्तार [जी ओ / एच पी-2 / 2004-2007 : एन एम पी बी]

स्थिति : औषधीय पादपों के लिए बुरन्धार, जगत सुख, मनाली (एच पी) में प्रदर्शन पौधशाला स्थापित की गई। शेड हाउस तथा पॉली हाउस अभिकल्पित किये गये और नर्सरी में स्थापित किये गये। पौधशाला में वर्मी-कम्पोस्टिंग क्रियाकलाप सफलतापूर्वक चलाये जा रहे हैं। सिंचाई सुविधाओं को बेहतर बनाया गया जो शीतोष्ण औषधीय पादपों के लिए अत्यंत लाभदायी सिद्ध हुआ। पिक्रोराइजा कुरुआ (कुटकी) तथा वेलीरिआना जटामांसी (मुश्कबाला) को संस्थान की तीन पौधशालाओं मनाली, सोलन और शिमला ले जाया गया।

इन खुली बैठकों में किसानों को जागरूक किया गया और कुटकी तथा शीतोष्ण क्षेत्रों में मुश्कबाला का वाणिज्यिक उत्पाद करने हेतु प्रेरित किया गया। स्थानीय लोगों के लाभ के लिए दो पुस्तिकाये तथा दो पैम्पलेट्स हिन्दी में छपवाये गये।



गोहर में किसानों के लिए प्रशिक्षण तथा प्रदर्शन कार्यक्रम (हिमाचल प्रदेश का नचान वन प्रभाग)

परियोजना 11 : हिमाचल प्रदेश के निम्न मध्य हिमालयी क्षेत्र में जैट्रोफा करकश एल सीड की उपयुक्तता [बी टी / पी आर / 5094 / ए जी आर / 16 / 429 / 2005-2008-निधिकरण निकाय : डी बी टी]

स्थिति : मुख्यतः हिमाचल प्रदेश से संग्रहित विभिन्न बीजों से 46000 स्तरीय रोपण सामग्रियां उत्पन्न की गई। राज्य के मध्य और निम्न हिमालयी क्षेत्र में 55 प्रजाति / बीज संसाधनों की उपयुक्तता जानने के लिए विभिन्न स्थलों में प्रायोगिक एवं प्रदर्शन रोपणियां स्थापित की गई। वर्ष 2005-2006 के दौरान परियोजना के लिए करीब 110 कि.ग्रा. जैट्रोफा करकश के बीज संग्रहित किये गये। हिमाचल प्रदेश में अवस्थित बीज स्रोतों में तेल मात्रा पाई गई। इन बीज स्रोतों का पौधशालाओं में स्तरीय उत्पादन के लिए उपयोग किया जा रहा है जिससे भविष्य के बीज स्रोतों के लिए प्रदर्शन रोपणियां स्थापित की जा सकें। उपभोक्ताओं के उपयोग हेतु सरल हिन्दी में "जैट्रोफा : भविष्य का बायोडीजल पौधा" नामक पुस्तिका प्रकाशित की गई।



पौधशाला स्टॉक उत्पादन



बाह्यरोपण के लिए तैयार पौधे

कार्य क्षेत्रीय रोपणियां

परियोजना 12 : हिमाचल प्रदेश के स्थानीय समुदायों के लिए वन्य एप्रीकोट की उत्तम रोपण सामग्री का विकास, मॉडल रोपणियों का विकास और विस्तार [27-114/एन ओ वी ओ डी)/ 2006-2007 : एन ओ वी ओ डी]

स्थिति : हिमाचल प्रदेश के किन्नौर और शिमला जिलों के चयनित क्षेत्रों से वनीय एप्रीकोट के बीज एकत्र किये गये। पौधशाला क्यारियों में बोने से पहले सर्दियों के मौसम में पूर्व उपचार किया गया। संस्थान की पौधशालाओं में इस प्रजाति की लगभग 10000 स्तरीय रोपण सामग्री तैयार की गई। हिमाचल प्रदेश के मण्डी और कुल्लू जिलों में 10 हे. क्षेत्र में प्रदर्शन रोपणियां स्थापित की गईं। वनीय एप्रीकोट की प्रदर्शन रोपण का अनुरक्षण भी किया गया। हिमाचल प्रदेश वन विभाग के स्थानीय समुदाओं और कार्य क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं के लिए "वनीय एप्रीकोट-पौधशाला, रोपणियां, तेल उत्पादन और उपयोजन" पर कार्यक्रम आयोजित किये गये।



वनीय एप्रीकोट की खेती को लोकप्रिय बनाने के लिए वनकर्मियों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

परियोजना 13 : हिमाचल प्रदेश में 100 हे. प्रदर्शन भूखंडों की स्थापना और डेन्ड्रोकेलेमस हेमिल्टोनी की उत्तम रोपण सामग्री उत्पन्न करना [बी टी/पी आर/5243/एन जी आर/16/456/ 2005-2008-निधिकरण निकाय : डी बी टी]

स्थिति : सोलन वन प्रभाग में धादियारघाट में डेड्रोकैलेमस हेमिल्टोनी— के प्रदर्शन भूखण्ड उगाये जा रहे हैं। पादपों को हिमालयी जैव स्रोत प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा उगाया जा रहा है। निधिकरण निकाय अर्थात डी बी टी द्वारा प्रायोगिक तथा प्रदर्शन भूखण्डों के तकनीकी विवरण दिये गये हैं। 20.72 हे. का कुल लक्ष्य प्राप्त किया गया है। उगाये गये क्षेत्र का उचित प्रबंधन और अनुरक्षण किया जा रहा है।

वर्ष 2006-2007 के दौरान शुरू की गई परियोजनाएं (बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1 : एकोनीटम हेट्रोफाइलम वाल एक्स रॉयल तथा अंगेलिका ग्लूका एड्ग्यू की स्तरीय रोपण सामग्री का उत्पादन तथा स्थानीय समुदायों में संवृद्धि तकनीक का विस्तार [जी ओ/एच पी-07 / 2006-2009 : एन एम पी बी]

स्थिति : एकोनीटम हेट्रोफाइलम के करीब एक लाख साठ हजार और अंगेलिका ग्लूका के छः हजार नर्सरी स्टॉक तैयार किये गये, 30,000 एकोनीटम हेट्रोफाइलम नर्सरी स्टॉक में से 30,000 को विभिन्न उपभोक्ताओं में वितरित किया जा चुका है। अनुसंधान के लिए शिलारी नर्सरी में 10x4 मीटर आकार का छोटा सा पॉली हाउस बनाया गया है जो उत्पादन और प्रदर्शन के लिए है। इस परियोजना के तहत वर्षा जल संचय सुविधाये भी मुहैया कराई गई है। पौधशाला में वर्मी कम्पोस्टिंग कार्यक्रम सफलतापूर्वक चलाये जा रहे हैं। किसानों के लाभ के लिए प्रशिक्षण और प्रदर्शन कार्यक्रम चलाया जा रहा है। स्थानीय समुदायों के लाभ के लिए हिन्दी में दो पम्पलेट प्रकाशित किये गये हैं।



अतीश में पौधशाला निरीक्षण करते हुए
महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प.।



चोपाल के सीरिटी गांव में प्रशिक्षण कार्यक्रम

सारांश : परियोजनाओं की संख्या

	2006-2007 में पूरी की गई परियोजनाओं की संख्या	2006-2007 में जारी परियोजनाओं की संख्या	2006-2007 में शुरू की गई परियोजनाओं की संख्या
प्लान परियोजनाएं	3	9	4
बाहय परियोजनाएं	—	13	1
योग	3	22	5



शिक्षा एवं प्रशिक्षण

शिक्षा

1. प्रो० एस एल स्टीफेन्सन – यूमाइसिटोजोन्स के विश्व प्रसिद्ध विद्वान-आर्कन्सास विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका ने “यूमाइसिटोजोन्स की भूमण्डलीय विविधता” पर 25 मई 2006 को संस्थान के सम्मेलन कक्ष में व्याख्यान दिया।
2. श्री फ्रड्ड वानिया – एच पी एफ एस आर शिमला के एडवाईजर चेंज प्रबंधन ने “जलागम विकास कार्यक्रमों के समाघात आकलन” पर 29 मई 2006 को संस्थान के सम्मेलन कक्ष में व्याख्यान दिया।
3. उत्तरी भारत के दौरे के दौरान वन सेवा महाविद्यालय के 21 एस एफ एस अधिकारियों ने 12 जून 2006 को संस्थान का दौरा किया। उन्हें एच एफ आर आई के जारी क्रियाकलापों और उपलब्धियों से अवगत कराया गया। अधिकारियों और इस संस्थान के वैज्ञानिकों वानिकी अनुसंधान संबंधी विषयों पर विचार विमर्श भी किया।
4. डा. ओलीवर स्पिंगेट, बगनिस्की, सलाहकार, हिमाचल प्रदेश वन सेक्टर सुधार परियोजना, द्वारा संस्थान के निदेशक के साथ आवश्यक विचार-विमर्श के लिए अगस्त 2006 में संस्थान का दौरा किया गया। बैठक के दौरान सतत वानिकी से संबंधित विषयों पर चर्चा की गई।
5. श्रीमती वन्दना थपलियाल, संयोजक, डब्ल्यू डब्ल्यू एफ शिमला ने डब्ल्यू डब्ल्यू एफ द्वारा आयोजित “पारिपर्यटन में मार्गदर्शन के लिए स्थानीय युवाओं का प्रशिक्षण कार्यक्रम” के 20 भागीदारों के साथ संस्थान का दौरा किया। भ्रमण के दौरान युवाओं की पारिपर्यटन में वृद्धि के लिए वनों की भूमिका के बारे में बताया गया।
6. तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, फारेस्ट कालेज एवं अनुसंधान संस्थान, मेट्टूपलायम की बी. एससी. वानिकी के 18 विद्यार्थियों की टीम ने 08 सितम्बर 2006 को संस्थान का दौरा किया और संस्थान के संकाय सदस्यों के साथ सामान्य वानिकी और खासकर वानिकी अनुसंधान पर विचार-विमर्श किया।
7. श्री बी. डी. सुयाल, वन संरक्षक (नीति एवं कानून) ने 21 सितम्बर 2006 को संस्थान का दौरा किया और संस्थान के अधिकारियों के समक्ष सूचना अधिकार अधिनियम 2005 पर व्याख्यान दिया। प्रस्तुतिकरण के दौरान अधिनियम की पृष्ठभूमि, इतिहास, मूल्यांकन और प्रावधानों पर चर्चा की गई। इसके बाद इस संबंध में काफी विचार-विमर्श हुआ।
8. सुश्री रीता कुमारी शर्मा, प्रशिक्षणार्थी बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल ने “आइसोजाइम विश्लेषण-सिड्रस देवदारा” पर संस्थान के वैज्ञानिक ‘ई’ डा. राजेश शर्मा के सुपरविजन में शोध कार्य पूरा किया।
9. संस्थान द्वारा रेणुका वन प्रभाग के जमाता रेंज में औषधीय पादपों के बारे में 20 दिसम्बर 2006 को कलाथ नर्सरी / प्रदर्शन भूखंडों में 50 किसानों के लिए दौरा आयोजित किया गया।
10. शेर-ए-कश्मीर कृषि विश्वविद्यालय, विज्ञान एवं तकनीक, श्रीनगर (जम्मू और कश्मीर) के एम एस सी की वानिकी के छात्रों ने 21 फरवरी 2007 को संस्थान का दौरा किया। विद्यार्थियों को संस्थान के क्रियाकलापों तथा उपलब्धियों की जानकारी दी गई।
11. सुश्री शीतल संधु, कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, गुरुकुल, कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, ने “चूना पत्थर खनित क्षेत्र के पुनर्स्थापन और वनस्पति तथा मृदाओं पर बल्डवा, जिला सिरमौर में समाघात” पर इस संस्थान के डॉ. आर. के. वर्मा, वैज्ञानिक ‘डी’ के सुपरविजन में शोध कार्य पूरा किया।

प्रशिक्षण

1. आटो सजेसन्स तथा अन्य अभ्यासों द्वारा क्षमतावृद्धि पर 2-4 अगस्त 2006 को परियोजना निदेशक हिमाचल प्रदेश वन सेक्टर सुधार परियोजना, हिमाचल प्रदेश राज्य वन विभाग, टालिंड शिमला द्वारा हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के सहयोग से आटो एजेसन्स तथा अन्य अभ्यासों द्वारा क्षमतावृद्धि पर 2-4 अगस्त



- 2006 को संस्थान के सम्मेलन कक्ष में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में श्री सुरेन्द्र कुमार भावसे ने 15 अधिकारियों के साथ प्रशिक्षण में भाग लिया।
2. "औषधीय पादप संवृद्धि" तथा "पौधशाला और रोपण तकनीकें" पर रामपुर में 13-14 सितम्बर 2006 को एक-एक दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया गया। प्रशिक्षणों को कैट प्लान रामपुर सर्किल वन विभाग द्वारा वाह्य सहायता प्राप्त थी।
 3. 26-27 सितम्बर 2006 को नहान में "औषधीय पादप संवृद्धि" पर दो दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 50 किसानों और 50 एस एफ डी (नहान) कर्मियों ने भाग लिया।
 4. "कुटकी और मुख्यबाला की वाणिज्यिक संवृद्धि" पर संस्थान द्वारा 21-22 नवम्बर 2006 को गोहर-नचान वन प्रभाग, हिमाचल प्रदेश में दो दिन का प्रशिक्षण और प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण को एन एम पी बी द्वारा निधिकृत परियोजना के तहत आयोजित किया गया। इसमें 50% महिलाओं सहित मण्डी जिले के 48 किसानों ने भाग लिया।
 5. "औषधीय पादप संवृद्धि" पर 20-21 दिसम्बर 2006 को रेणुका, हिमाचल प्रदेश में दो दिन का प्रशिक्षण और प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण को हिमाचल प्रदेश गुड आइडिया फण्ड, वन सेक्टर सुधार परियोजना के तहत आयोजित किया गया। इसमें करीब 50 किसानों और रेणुका वन प्रभाग, जिला सिरमौर के 50 अग्रगामी कर्मियों ने भाग लिया।
 6. "वन्य स्त्रीकोट-पौधशाला, रोपण, तेल उत्पाद- और उपयोजन" पर संस्थान द्वारा 27-28 दिसम्बर 2006 को वन प्रशिक्षण केन्द्र, सुन्दर नगर, जिला मण्डी, हिमाचल प्रदेश में आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण को एन ओ वी ओ डी निधिकृत परियोजना के तहत आयोजित किया गया। हिमाचल प्रदेश वन विभाग के लगभग 50 अग्रगामी कर्मियों ने इसमें भाग लिया।
 7. बिग गुड आइडिया फण्ड परियोजना के तहत 6-7 और 9 फरवरी 2007 को "औषधीय पादपों की संवृद्धि" पर राजगढ़ वन प्रभाग तथा नहान वन प्रभाग जिला सिरमौर में किसानों और अग्रगामी कर्मियों के लिए प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया।
 8. "वन्य एप्रिकोट" पर पावर्ती घाटी कुल्लू के जारी गांव में 12-13 मार्च 2007 को एन ओ वी ओ डी बोर्ड निधिकृत परियोजना के तहत दो दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण में औषधीय पादप, कम्पोस्टिंग, वर्मी कम्पोस्टिंग आदि के बारे में भी बताया गया। इसमें क्षेत्र के 67 किसानों ने भाग लिया।
 9. "औषधीय पादप संवृद्धि" पर ग्रामीणों तथा अग्रगामी स्टॉफ के लिए एक-एक दिन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। रेणुका में 21-22 दिसम्बर को रेणुका वन प्रभाग के 50 भागीदारों ने भाग लिया।
 10. एस एफ आर एल जम्मू में 21-22 फरवरी 2007 को जम्मू वन प्रभाग के अग्रगामी कर्मियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
 11. कुल्लू में 27-28 जनवरी 2007 को गैर सरकारी संगठन "पारितंत्र संरक्षण, उद्यम, शिक्षा और विकास" द्वारा "सुरभित पादपों और औषधीय पादपों की संवृद्धि" पर प्रशिक्षण दिया गया।

सहानुबंध और सहयोग

राष्ट्रीय

1. औषधीय पादपों के सक्रिय घटकों के विश्लेषण के लिए आई एच वी टी, पालमपुर से अनुबंध किया गया।
2. गैर सरकारी संगठनों और राज्य वन विभागों से विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों हेतु अनुबंध और सहयोग किया गया।
3. सी एस के, हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर से वर्गीकरण विज्ञान संबंधी अध्ययन के लिए सहयोग शुरू किया गया। इसके अलावा विचारों/सूचनाओं का आदान-प्रदान करने के लिए संस्थानों/विश्वविद्यालयों से संबंध बनाये जा रहे हैं।



प्रकाशन

पुस्तिकाएं/तकनीकी बुलेटिन/बुकलेट्स/पैम्पलेट्स

1. विजेन्द्र पी; पंवार, जगदीश सिंह और के. डी. शर्मा (2007)(संपादक) "कल्टीवेशन ऑफ मेडिसिनल प्लांट्स"
2. अतिश : एक अनमोल औषधीय पौधा
3. छोरा : एक महत्वपूर्ण औषधीय पौधा
4. कुटकी : एक बहुमूल्य औषधीय पौधा
5. मुश्कबाला : बहुउपयोगी जड़ी-बूटी

अनुसंधान रिपोर्ट

1. के एस कपूर, सन्दीप शर्मा और आर सिंह (2006). देवदार टुंठों को हटाने पर देवदार के वनों के पारितंत्र पर प्रभाव। हिमाचल प्रदेश वन विभाग को दी गई प्रतिवेदन।
2. शर्मा के डी; आर. सिंह, विजेन्द्र कुमार और पवन कुमार (2007). हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू और कश्मीर राज्य के एफ डी ए पर मध्यावधि आंकलन प्रतिवेदन।

परामर्श

"सवारा-कुड्डू जल विद्युत परियोजना : फाइटो डाइवर्सिटी की स्थिति : प्रारंभिक विश्लेषण के संबंध में परियोजना स्थल के प्रारंभिक सर्वेक्षण पर सुपरिन्टेडिंग इंजीनियर (सीपी व सीएम), पब्लर वैली पावर कार्पोरेशन लिमिटेड, आनन्द वास, बसन्त बिहार, खालिनी, शिमला को रिपोर्ट दी गई है।

सम्मेलन/बैठकें/कार्यशालायें/सेमीनार/संगोष्ठी/प्रदर्शनियां

आयोजित

1. "निरंतर आय प्राप्त के लिए ग्रामीण समुदाओं में औषधीय पादपों की संवृद्धि" पर परियोजना – जी आई एफ के तहत संस्थान द्वारा 19 अप्रैल 2006 को नहान, सिरमौर में वाहय सहायता प्राप्त परियोजना आयोजित की गई। विभिन्न क्षेत्र के लोगों यथा : एस एफ डी, एन जी ओ तथा क्षेत्र के किसानों ने इस बैठक में भाग लिया।
2. सांख्यिकीय तथा सामाजिक-आर्थिक विकास पर चल रही अनुसंधान परियोजनाओं पर 16 मई 2006 को एक दिन की कार्यशाला का आयोजन किया गया। संबंधित कार्य का निष्पादन करने के लिए प्रो०वाई एस नेगी, सामाजिक विज्ञान प्रमुख तथा प्रो० (से.नि.) एस पी ढाल, विज्ञान विभाग, डा. वाई एस परमार फलोद्यान एवं वानिकी, नऊनी जिला सोलन, को विशेषज्ञ सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया।
3. एफ आर आई विश्वविद्यालय, देहरादून की सलाहकार समिति की बैठक इस संस्थान द्वारा 26 जून 2006 को आयोजित की गई जिसका उद्देश्य इस केन्द्र में पी एच डी अनुसंधानकर्ताओं की छमाही प्रगति की समीक्षा करना था। अनुसंधानकर्ताओं के शोधपूर्व सेमीनार को सम विश्वविद्यालय में पहले ही पंजीकृत करवा लिया गया था। संस्थान के निदेशक इस समिति के अध्यक्ष थे जबकि प्रो. सर्वेश सूद, अध्यक्ष बायो-साइंस हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समर हिल शिमला और डा. वी.डी. वर्मा, प्रधान वैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक इन्चार्ज, एन वी पी जी आर, फागली, शिमला, संस्थान से बाहर के विशेषज्ञ सदस्य थे।
4. वर्तमान उद्यान विज्ञान पद्धतियों में विविधता लाने के लिए औषधीय पादपों के वाणिज्यिक उपयोग हेतु कुल्लू घाटी के किसानों के साथ विचार-विमर्श करने के लिए 12 जुलाई 2006 को "किसानों की खुली बैठक" का आयोजन किया गया।



5. “वानिकी अनुसंधान आवश्यकता आकलन : हिमाचल प्रदेश में संस्थानीकरण की प्रक्रिया ” पर 10 अक्टूबर 2006 को एच एफ आर आई, शिमला में एक दिन की कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें हिमाचल प्रदेश वन विभाग, अनुसंधान संगठन, गैर सरकारी संगठनों और वानिकी से संबंधित विश्वविद्यालयों के करीब 35 भागीदारों ने भाग लिया। प्रस्तुतीकरण तथा विचार-विमर्श से भागीदारों को लाभान्वित किया गया। इस कार्यशाला में श्री अशोक ठाकुर, भा.प्र.से., प्रधान सचिव (वन), हिमाचल प्रदेश सरकार इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे।
6. इस संस्थान की अनुसंधान सलाहकार वर्ग की बैठक 18 अक्टूबर 2006 को आयोजित की गई जिसमें प्लान के तहत जारी 15 अनुसंधान परियोजनाओं तथा 14 वाह्य सहायता प्राप्त अनुसंधान योजनाओं का मूल्यांकन किया गया। संबंधित पी आई द्वारा चार नई परियोजनायें प्रस्तुत की गईं जिनमें से आर ए जी द्वारा दो की संस्तुति की गई और आई सी एफ आर ई की अनुसंधान नीति समिति के पास अन्तिम स्वीकृति के लिए भेजी गई। श्री जे एस वालिया भावसे, मुख्य वन संरक्षक (सांझी वन योजना) एच पी एफ डी, शिमला द्वारा “प्राकृतिक पूंजी वृद्धि द्वारा आर्थिक हल” विषय पर प्रस्तुति दी गई।
7. “उत्तर-पूर्वी हिमालय में कृषि वानिकी की स्थिति और क्षमता” पर एच एफ आर आई शिमला द्वारा 14 से 16 नवम्बर 2006 तक संस्थान के सम्मेलन में कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें हिमाचल प्रदेश वन विभाग, वानिकी से संबंधित अनुसंधान संगठन, विश्वविद्यालय तथा एन जी ओ ने भाग लिया। इसे हिमाचल प्रदेश के राज्य भूमि उपयोग बोर्ड द्वारा प्रायोजित किया गया था। कार्यशाला के दौरान प्रस्तुतिकरण और विचार-विमर्श से कृषि वानिकी के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया गया। श्री अशोक ठाकुर, भा.प्र.से. प्रधान सचिव (वन), हिमाचल प्रदेश सरकार इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। श्री आर ए सिंह, पी सी सी एफ, हिमाचल प्रदेश वन विभाग भी इस अवसर पर उपस्थित थे।
8. एच एफ आर आई में 14 से 16 नवम्बर 2006 को राज्य भूमि उपयोग बोर्ड, हिमाचल प्रदेश वन विभाग द्वारा प्रायोजित “उत्तर पश्चिमी हिमालय में कृषि वानिकी की स्थिति और शक्तियां” कार्यशाला का आयोजन 14 से 16 नवम्बर 2006 को किया गया।

सहभागिता

1. संयुक्त सदस्य सचिव, राज्य विज्ञान तकनीक तथा पर्यावरण, हिमाचल प्रदेश, शिमला से आमंत्रण प्राप्त होने पर डॉ. राजेश शर्मा, वैज्ञानिक डी ने हिमाचल प्रदेश में वाणिज्यिक उद्देश्य के लिए बांस वृद्धि को लोकप्रिय बनाने हेतु आयोजित कार्यशाला में भाग लिया जिसका आयोजन हिमाचल प्रदेश सचिवालय में 12 अप्रैल 2006 को किया गया था।
2. श्री सुरेन्द्र कुमार, भावसे, निदेशक, एच एफ आर आई, शिमला तथा डा. के.एस. कपूर, संयोजक (अनुसंधान) ने हिमाचल प्रदेश राज्य वन विभाग द्वारा हिमाचल प्रदेश वानिकी सेक्टर रिफार्म परियोजना के तहत नोबल इन्स्टीट्यूट फॉर प्रिमियर टैक्नालॉजी लिमिटेड के सहयोग से दिनांक 19 मई 2006 को जल भवन, कसुमपट्टी शिमला में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया।
3. श्री सुरेन्द्र कुमार, भावसे, निदेशक, एच एफ आर आई, शिमला ने “प्राकृतिक संसाधन, जलवायु परिवर्तन तथा सामाजिक विकास को मानीटर” करने हेतु 31 मई 2006 होटल होलीडे होम में अंतर्राष्ट्रीय पालिसी कार्यशाला में भाग लिया जिसे जियोइन्फार्मेटिक्स अनुसंधान एवं प्रशिक्षण, सी एस के एच पी कृषि विश्वविद्यालय द्वारा पर्वतीय विकास, काठमाण्डु नेपाल के अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र तथा कृषि विभाग हिमाचल प्रदेश के सहयोग से आयोजित किया गया था।
4. श्री सुरेन्द्र कुमार, भावसे, निदेशक, एच एफ आर आई, शिमला ने श्री के एस ठाकुर, भावसे, डी सी एफ, संवर्धन तथा वृक्ष सुधार प्रभाग प्रमुख, डॉ. संदीप शर्मा, वैज्ञानिक डी, श्री पीतम्बर सिंह नेगी, के साथ 5-6 जून, 2006 को एफ आर आई देहरादून में एफ आर आई शताब्दी समारोह में भाग लिया।



5. श्री सुरेन्द्र कुमार, भावसे, निदेशक, एच एफ आर आई, शिमला ने 20 जुलाई 2006 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस में भाग लिया जिसे डा. वाई एस परमार, उद्यान एवं वानिकी विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय उद्यान अनुसंधान केन्द्र, मशोब्रा, शिमला द्वारा आयोजित किया गया था। समारोह के दौरान उन्होंने "अच्छे पर्यावरण के लिए वनों की भूमिका" पर व्याख्यान किया।
6. डॉ. के एस कपूर, वैज्ञानिक तथा संयोजक (अनुसंधान) ने हिमाचल प्रदेश के लिए विज्ञान और तकनीक नीति पर 21 जुलाई 2006 को विभाग को झकझोर देने वाली बैठक में भाग लिया जिसे विज्ञान, तकनीक एवं पर्यावरण राज्य परिषद् शिमला द्वारा आयोजित किया गया था।
7. श्री सुरेन्द्र कुमार, भावसे, निदेशक, एच एफ आर आई, शिमला ने 17 अगस्त 2006 को हिमाचल प्रदेश वन सेक्टर सुधार परियोजना के प्रबंधन एवं आपरेशन कमेटी की आठवीं बैठक में भाग लिया जिसमें पिछली बैठक के निपटों पर कार्रवाई तथा परियोजना प्रगति की समीक्षा की गई, साथ ही परियोजना से संबंधित अन्य बातों पर भी चर्चा की गई।
8. डॉ. सन्दीप शर्मा ने एफ आर आई, देहरादून द्वारा 29-30 अगस्त 2006 को एफ आर आई, देहरादून में आयोजित "रोजगार पैदा करने तथा ग्रामीण विकास में वानिकी की भूमिका" पर राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया और प्रलेख प्रस्तुत किया।
9. श्री सुरेन्द्र कुमार, भावसे, निदेशक, एच एफ आर आई, शिमला ने 10-11 सितम्बर 2006 को हिमाचल यूनिट मोहाल कुल्लू द्वारा गोविन्द बल्लभ पंत हिमालयन विकास संस्थान के विज्ञान पर आयोजित वार्षिक दिवस तथा विभाग को झकझोर देने वाली सत्र में भाग लिया और प्रलेख प्रस्तुत किया।
10. डा. के एस कपूर, कोआर्डिनेटर (अनुसंधान) ने 20वीं शताब्दी में एशियाई शंकुवृक्षों के प्रजनन और सुधार पर फलोउद्यान एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन तथा वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय, सेम्पोजियम में 11-13 सितम्बर 2006 को भाग लिया।
11. डा. शशीकुमार, भावसे, निदेशक (अनुसंधान) आई सी एफ आर ई से निमंत्रण मिलने पर श्री सुरेन्द्र कुमार, भावसे निदेशक, एच एफ आर आई, शिमला ने 14-15 सितम्बर 2006 को आई सी एफ आर ई देहरादून में वनीकरण तथा पुनर्वनीकरण से सी डी एम बैरियर हटाने में पणधारियों की प्रस्तावित नीति पर बैठक में भाग लिया।
12. श्री सुरेन्द्र कुमार, भावसे, निदेशक, एच एफ आर आई, शिमला ने आई सी एफ आर ई सोसाइटी मीटिंग में भाग लिया जो ए राजा, माननीय मंत्री, पर्यावरण एवं वन, भारत सरकार की अध्यक्षता में 22 नवम्बर 2006 को पर्यावरण भवन, नई दिल्ली में आयोजित की गई थी।
13. डॉ. के एस कपूर, संयोजक (अनुसंधान) ने ग्लेशियर पर्यावरण तथा जलवायु परिवर्तन को मानीटर करने हेतु क्षेत्रीय केन्द्र खोलने के संबंध में हिमाचल प्रदेश में कार्य वर्ग की बैठक में भाग लिया जिसका आयोजन विज्ञान तकनीक तथा पर्यावरण परिषद् द्वारा 23-24 नवम्बर 2006 को होटल होलीडे होम में किया गया था।
14. इस संस्थान ने श्री आर के वर्मा, वैज्ञानिक डी ने भारतीय वानिकी अनुसंधान शिक्षा परिषद्, देहरादून द्वारा 29-30 नवम्बर 2006 को आई आई टी ओ- आई सी एफ आर ई सहयोग परियोजना द्वारा आयोजित वानिकी सांख्यिकी पणधारियों की बैठक/सेमिनार में भाग लिया।
15. श्री सुरेन्द्र कुमार, भावसे, निदेशक, एच एफ आर आई, शिमला तथा इस संस्थान के डॉ. आर के वर्मा ने "हिमाचल प्रदेश राज्य रोड़ वन परियोजना, वन्य जीव तथा जैव विविधता विषयों" पर 14 दिसम्बर 2006 को होटल होली डे होम, शिमला में आयोजित परामर्शी कार्यशाला में भाग लिया जिसे हिमाचल प्रदेश पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट द्वारा आयोजित किया गया था।
16. डा. विजेन्द्र पी पंवार, वैज्ञानिक बी ने नोडल आफिसर्स की बैठक में भाग लिया जिसका आयोजन ए डी जी (एम एण्ड ई) द्वारा 27 से 29 दिसम्बर 2006 तक आई सी एफ आर ई, देहरादून में किया गया था। इस बैठक का उद्देश्य एफ डी ए परियोजना के मूल्यांकन के लिए फार्मेट बनाना तथा रणनीति तैयार करना था। आई सी एफ आर ई की एन ए ई बी द्वारा इस संबंध में परामर्श दिया गया।



17. डॉ. के.एस. कपूर, जन सूचना अधिकारी, एच.एफ.आर.आई, शिमला ने 18-19 जनवरी 2007 को नई दिल्ली में "सूचना अधिकार अधिनियम 2005" पर तकनीकी कार्यशाला में भाग लिया जिसे आई.एस.डी.आर.ए. द्वारा होटल कनॉट प्लेस, नई दिल्ली में आयोजित किया गया था।
18. इस संस्थान के डॉ. राजेश शर्मा, वैज्ञानिक ई ने "वन उत्पादकता वृद्धि : आनुवंशिकीय तथा प्रजनन विकल्पों" पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया जिसका आयोजन उष्णकटिबंधी वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा 21 से 23 फरवरी 2007 को किया गया था। उन्होंने इस अवसर पर "पाइनस रोकसबर्गाई सर्ग के उद्गमस्थल तथा धन वृक्षों के अध्ययन" पर प्रलेख प्रस्तुत किया।
19. इस संस्थान के डा. सन्दीप शर्मा, वैज्ञानिक डी ने जैव प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा 20 फरवरी 2007 को डी.बी.टी.स्टीरिंग कमेटी की बैठक में भाग लिया और प्रधान अन्वेषक "जैट्रोफा करकश एल सीड-हिमाचल प्रदेश, मध्य हिमालयी क्षेत्र" के रूप में भी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की।
20. डॉ. के.एस. कपूर, वैज्ञानिक ई तथा प्रमुख, पारितंत्र एवं जैव विविधता संरक्षण द्वारा उद्यान एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन में 3 मार्च 2007 को "जलवायु परिवर्तन और खेती पर उसका समाघात एवं प्राकृतिक संसाधन" पर आयोजित कार्यशाला में "वानिकी/वानस्पतिक विविधता का प्रभाव" विषय पर व्याख्यान दिया।
21. इस संस्थान के डॉ. रणजीत सिंह, वैज्ञानिक डी ने "कृषि वानिकी वृक्ष प्रजातियों की मृत्युता" पर 21-22 मार्च 2007 को चौधरी चरण सिंह, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में दो दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया और "उत्तर पश्चिमी हिमालय में वानिकी पारिपद्धतियों में वृक्षों का सूखना-एक कीट विज्ञानी की दृष्टि" पर अनुसंधान पत्र प्रस्तुत किया।
22. नार्वे विश्वविद्यालय जीवन विज्ञान, नार्वे तथा संयुक्त हिमालयी अध्ययन शिमला (हि.प्र.) शिमला में 5-6 अप्रैल 2006 को "हिमालयी क्षेत्र में मृदा एवं वन निम्नीकरण" पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लिया।
23. हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला (हि.प्र.) में 14-16 नवम्बर 2006 को आयोजित "उत्तर पश्चिमी हिमालय में कृषि वानिकी की क्षमता एवं स्थिति" की राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया तथा सक्रिय सहयोग दिया।
24. डा. रणजीत सिंह ने कीट विज्ञान पर राष्ट्रीय कांग्रेस में भाग लिया जिसे जन्तु विज्ञान विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, पटियाला ने 15 से 17 मार्च 2006 तक आयोजित किया था।
25. डॉ. रणजीत सिंह ने "उत्तर पश्चिमी हिमालय में कृषि वानिकी की स्थिति एवं क्षमता" पर हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा 14 से 16 नवम्बर 2006 तक आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।
26. श्री सुरेन्द्र कुमार, श्री के.डी.शर्मा, डॉ. राजेश शर्मा तथा डॉ. सन्दीप शर्मा ने "वानिकी पादपों पर पद्धतियों" विषय पर 7-8 नवम्बर 2006 को डॉ. वाई.एस.परमार उद्यान एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौनी (सोलन) हि.प्र. द्वारा आयोजित वानिकी कार्यशाला में सक्रिय रूप से भाग लिया।

प्रदर्शनियां

संस्थान ने "खुशहाली के लिए आलू" बैनर तले, किसान मेला में भाग लिया जिसे केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान द्वारा 15 जून 2006 को कुफरी में आयोजित किया गया था। इसमें संस्थान के क्रियाकलापों को लोगों और खासकर किसानों के हित में प्रदर्शित किया गया था।

अवार्ड

1. डा. संदीप शर्मा, पी.एस.नेगी, के.एस.ठाकुर और सुरेन्द्र कुमार (एच.एफ.आर.आई) की "कोल्यूटिया नेपालेन्सिस सिम के तना कर्तन द्वारा वानस्पतिक प्रसार का अध्ययन : शीत रेगिस्तान वनीकरण के लिए महत्वपूर्ण प्रजाति" पर इण्डियन फारेस्टर के मूल्यांकन सहयोग के लिए 5 जून 2006 को एफ.आर.आई के शताब्दी समारोह के



अवसर पर सम्मानित 'बेन्डिस प्राईज' प्रदान किया गया। यह अवार्ड वन संवर्धन के क्षेत्र में वर्ष 2004 के लिए दिया गया।

2. इस संस्थान को केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, कुफरी शिमला द्वारा 15 जून 2006 को आयोजित किसान मेला में दूसरा सर्वोत्तम स्टाल प्रदर्शनी अवार्ड दिया गया।

प्रतिष्ठित आगन्तुक

1. श्री ए के बहल, भावसे, उप महानिदेशक (शिक्षा), आई सी एफ आर ई, देहरादून ने 19 जून 2006 को इस संस्थान का दौरा किया और संस्थान में जारी अनुसंधान क्रियाकलापों/परियोजनाओं की प्रति का आकलन किया। उन्होंने संस्थान के वैज्ञानिकों और अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श भी किया।
2. श्री बी इस्लाम, भावसे, मुख्य वन संरक्षक (मानीटरिंग तथा मूल्यांकन) द्वारा 21 अगस्त 2006 को इस संस्थान का दौरा किया गया। उनके दौरे के दौरान संस्थान की पूर्व उपलब्धियों तथा वर्तमान में जारी अनुसंधान क्रिया कलापों पर विचार-विमर्श किया गया।
3. श्री विनय टंडन, भावसे, प्रधान सी सी एफ (वन्यजीव) द्वारा संस्थान में जारी परियोजनाओं के संबंध में विचार-विमर्श करने हेतु संस्थान का दौरा किया गया। विचार-विमर्श के दौरान उन्हें हिमाचल प्रदेश के वन्य जीव अभ्यारण में किये जा रहे पुष्पीय कार्यों की जानकारी भी दी गई।
4. श्री अशोक ठाकुर, भाप्रसे, प्रधान सचिव (वन), हिमाचल प्रदेश सरकार तथा आर ए सिंह, पी सी सी एफ, हिमाचल प्रदेश राज्य वन विभाग ने 14 नवम्बर 2006 को राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला का उद्घाटन करने हेतु संस्थान का दौरा किया।

विविध

केन्द्रीय सतर्कता आयोग, नई दिल्ली के अनुदेशों के अनुसार संस्थान द्वारा 6 से 10 नवम्बर 2006 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। सप्ताह के दौरान इस संबंध में विशेष शपथ ली गई।